चन्द्रपभ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

मुझमें इतनी शक्ति नहीं है, कैसे नाथ पुकारूँ मैं।
मेरे मन मंदिर आवो या , भावों से आ जाऊँ मैं।।
जैसा प्रभुवर आप कहोगे, वैसा मुझको करना है।
लक्ष्य यही है चन्द्रप्रभ जी, भवसागर से तरना है।।
भक्त अकेला तड़फ रहा है, विरह वेदना सुन लेना।
आह्वानन करता हूँ स्वामी, देहालय में आ जाना।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(त्रिभंगी छंद)

प्रासुक जल लाया, चरण चढ़ाया, मन निर्मल ना कर पाया।
तन का मल धोया, मन ना धोया, बुझी न जवाला शरणाया।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।1।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु भवदधि पारण, शांति विधायक, भवि शिव मारग कारक हो।
तव धुनि हितकारी, शीतल कारी, भवाताप के हारक हो।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।2।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
सारा जग नश्वर, प्रभु विनश्वर, भवि रक्षक हो त्रिभुवन में।
अक्षय पद देना, राह दिखाना, भटक गए हैं भव वन में।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।3।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
प्रभु विषय विरत हो, आत्म निरत हो, ब्रह्मचर्य व्रत अतिशायी।
मम काम नशा दो, आतम बल दो, कामशूर है बलशाली।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।4।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप निराकुल, मैं हूँ व्याकुल, क्षुधा रोग का रोगी हूँ।
प्रभु परम वैद्य हो, क्षुधा ध्वंस हो, कर्म फलों का भोगी हूँ।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।5।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन वचन तिहारे, कर्म निवारे, सत्पथ मारग प्रगटाये।
अज्ञान हटायें, ज्ञान जगायें, आर कर मनहर्षाये।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।6।।

ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप सिद्ध हो, जग प्रसिद्ध हो, शुद्ध गंध को हम लाये।
प्रभु शुद्ध बना दो, ऐसा वर दो, सिद्धालय को हम जाये।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप सफल हैं, जग निष्फल है, इंद्रिय सुख को ना चाहूँ।
सान्निध्य तिहारा, श्रीजिन प्यारा, मोक्ष महाफल पा जाऊँ।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आप ही मोक्षलक्ष्मी के स्वामी महा।
हम दास तिहारे, आये द्वारे, सिद्धक्षेत्र में बस जायें।
पद अर्घ्य चढ़ाये, शरणे आये, चन्द्रप्रभ सम बन जायें।।
अष्टम तीर्थंकर, घाति क्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊ, श्री गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

गर्भ दिवस पर मात लक्ष्मणा, देखे सोलह स्वप्न महान।
चौत्र कृष्ण पंचमी को त्यागा, वैजयंत का महा विमान।।
चंद्र कांति सम चन्द्रप्रभ की, महिमा वृहस्पति गाते।
रत्नों की बौछार हो रही, सुर नरपति भी हर्षाते।।1।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पौष कृष्ण एकादशी को नृप, महासेन घर जन्म लिया।
मेरु सुदर्शन पर ले जाकर, जिन बालक का न्हवन किया।।
प्रभु के जन्म कल्याणक को लख, छाया हर्ष अपार हैं
चन्द्रपुरी में गूँ ज रहें हैं, घर-घर मंगलाचार है।।2।।
ऊँ हीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभुवर के तप कल्याणक की, महिमा वच से कही न जाय।
संयम तप वैरागय का उतसव, करके सुर नर मुनि हर्षाय।।
वस्त्राभूषण त्याग दिये सब, पंच महाव्रत धार लिया।
जन्म दिवस के दिन ही प्रभु ने, संयम से अनुराग किया।।3।।
ऊँ हीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीन माह छद्मस्थ रहे प्रभु, निज आतम में होकर लीन।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन, केवलज्ञान हुआ स्वाधीन।।
पूर्णज्ञान है कल्पवृक्ष सम, भविजन मनवांछित पाते।
समवसरण में सुर नर पशु आ,सम्यग्दर्शन पा जाते।।4।।
ऊँ हीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
महा मोक्ष कल्याण आपका, नमूँ जोड़कर हाथ प्रभो।
और नहीं कुछ मुझे चाहिये, रहूँ आपके साथ प्रभो।।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी के दिन, ललित कूट से मुक्त हुये।
कर्म नष्ट कर सिद्धक्षेत्र में, मुक्तिरमा से युक्त हुये।।5।।

ऊँ हीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

वीतराग अरहंत प्रभु को, मन वच तन से करूँ प्रणाम।
अनंत चतुष्टय के धारी हैं, करते हैं, भविजन कल्याण।।
भावों से भरकर करते हैं, आज प्रभु का हम गुणगान।
चिंतामणि श्री चन्द्रप्रभ जी, करते सब कर्मों की हान।।1।।
चन्द्रपुरी के महासेन नृप, हुए यशस्वी अति गुणवान।
उनकी प्रिय रानी के उर से, जन्मे तीर्थंकर भगवान।।
जन्म हुआ जब प्रभु आपका, देवों ने जयगान किया।
प्रभु के तन को देख सभी ने, निज चेतन को जान लिया।।2।।
राज पाट में न्याय नीति से, यौवन में में जब लीनहुये।
किंतु स्व-पर का भेद जानकर, सिंहासन आसीन हुये।।
देख चमकती बिजली तत्क्षण, नष्ट हुई तो किया विचार।
सारा जग क्षणभंगुर माया, वस्त्राभूषण लिये उतार।।3।।
तीन माह तक मौन रहे और, कठिन तपस्या की जिनवर।
द्वादश तप के ही प्रभाव से, कर्म निर्जरा की प्रभुवर।।
सप्तम गुणथानक में पहुँचे, आत्म तत्त्व का करके ध्यान।
चार घातिया क्षय करते ही, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।।4।।
थे तिरानवे गणधर प्रभु के, मुख्य आर्यिका वरुणा मात।
श्रोता दानवीर्य आदि ने, वचन सुने होकर नत माथ।।
नाथ आपने समवसरण में, सार वस्तु को बतलाया।
नहीं सुनी मैंने जिनवाणी, अतः शरण में अब आया।।5।।
हे चन्द्रप्रभ आप पंथ पर, चलकर जिन पद पाऊँगा।
तव प्रसाद से लोक अग्र पर, सिद्धक्षेत्र को जाऊँगा।।
चन्द्र चिह्न शोभित चरणों में, आज नवाऊँ अपना शीश।
परम पवित्र सिद्ध पद पाऊँ, ऐसा दो मुझको आशीष ।।6।।

दोहा

कोटि भानु शशि से महा, जिनवर ज्योर्तिमान।
चन्द्रप्रभ तीर्थेश हैं, अनंत गुण की खान।।7।।

ऊँ हीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

चन्द्रप्रभ स्वामी, हे शिवधामी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।